हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 6 | अंक 17 | अक्टूबर 2015 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय ✍

अगला "विश्व हिंदी सम्मेलन" मॉरीशस में !

ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 2018 में मॉरीशस में होना तय हुआ है। यह मॉरीशस के लिए बड़े गर्व की बात है कि यहाँ पर तीसरी बार के लिए विश्व हिंदी सम्मेमन का आयोजन होने जा रहा है और साथ में विश्व हिंदी सचिवालय के भवन का उद्घाटन भी होगा। भारत के प्रधान मंत्री श्री दामोदर मोदी जी ने सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में हिंदी भाषा को लेकर मॉरीशस देश का एक बार फिर ज़िक्र किया। हिंदी भाषा को लेकर पूरे विश्व में अब मॉरीशस विख्यात है। मॉरीशस के लिए पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में भी इसका सकारात्मक परिणाम हो सकता है। सम्मेलन में पूरे विश्व के हिंदी साहित्यकार व विद्वान उपस्थित थे। इस तरह मॉरीशस के बारे में विद्वानों द्वारा ज्यादा खोज कार्य होगा और हमारे लघु भारत में सम्मेलन के अवसर पर पूरे विश्व के हिंदी-विद्वानों का जमघट लगेगा। हमें अभी से ही दिमागी तौर पर तैयारियाँ शुरू कर देनी चाहिए।

अगले सम्मेलन के लिए हमारा देश क्यों चुना गया ? इसके पीछे अनेकों कारण हो सकते हैं। गिरमिटिया देशों में मॉरीशस ही ऐसा देश है जिसके 20 प्रतिनिधि भोपाल के सम्मेलन में गए हुए थे। दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में "विश्व हिंदी सम्मान" प्राप्त करने वालों में मॉरीशस ही ऐसा देश है जहाँ के दो हिंदी सेवियों को सम्मानित किया गया। भारत से बाहर मॉरीशस ही ऐसा देश है जहाँ हिंदी का इतना बोलबाला है। प्रधान मंत्री मोदी जी ने बताया था कि प्रदर्शिनी में मॉरीशस ही ऐसा देश है जहाँ से 130 हिंदी की पुस्तकें प्रदर्शित हुई थीं। मॉरीशस ही ऐसा देश है जहाँ इतनी संख्या में हिंदी के विद्वान हैं तथा हिंदी भाषा का पठन-पाठन होता है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि हमारे देश में हर वर्ष जितनी हिंदी की पुस्तकों का प्रकाशन होता है उतनी किसी भी भाषा में नहीं होता ! सम्मेलन के आयोजन में मॉरीशस का पूर्वानुभव है। ♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

हिंदी दिवस 2015

गोवा-भारत की राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिंहा संबोधित करते हुए।

हिंदी प्रचारिणी सभा के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में ता. 22 अगस्त 2015 को तुलसी जयंती के अवसर पर हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। उस अवसर पर परिचय से उत्तमा (साहित्य रत्न)परीक्षाओं में उत्तीर्ण दस प्रथम स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। साथ में कविता-वाचन प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता तथा श्रुतिलेख प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

अवसर पर कई महानुभाव तथा हिंदी के विद्वान उपस्थित थे, जिनमें गोवा की गवर्नर श्रीमती मृदुला सिंहा, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ.नूतन पांडेय,विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल,डॉ.श्रीमती सरिता बुधु, श्री सत्यदेव प्रीतम, श्रीमती रोहिनी रामरूप,श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी आदि।

कार्यक्रम की शुरूआत छात्रों द्वारा एक सरस्वती वन्दना से हुई। कविता-वाचन प्रतियोगिता के विजेता आयुष सुकन की कविता का रसास्वादन करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। तुलसी जयंती के अवसर पर रामचरितमानस की चौपाइयों का गान भी हुआ। अंत में उपस्थित अतिथियों के कर-कमलों द्वारा छात्रों को पुरस्कार प्राप्त हुए। ♦

हिंदी दिवस के अवसर पर वर्ष 2014 की उत्तमा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त छात्रा लक्षणा रघुबर श्री सत्यदेव प्रीतम के हाथों पुरस्कार लेते हुए।

"संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेज़ी नौकरानी है।"
'फ़ादर कामिल बुल्के'

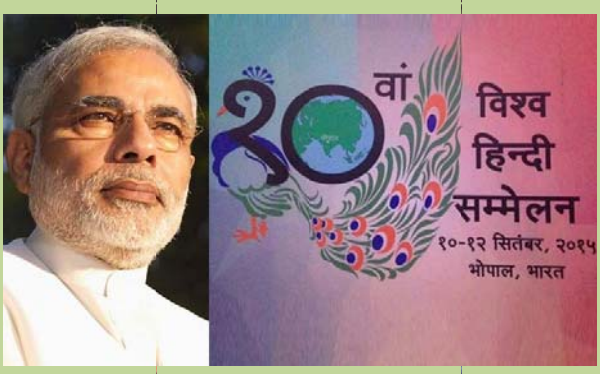

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 12 सितंबर को भोपाल में सकुशल सम्पन्न हुआ। मॉरीशस से शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन के नेतृत्व में 20 प्रतिनिधि भोपाल गए हुए थे जिनमें हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से प्रधान श्री यंतुदेव बुधु तथा कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन भी शामिल थे।

यह हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन था। इसमें दुनिया भर से हिंदी के विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी और हिंदी प्रेमी जुटे थे। भोपाल के हवाई अड्डे से आयोजन स्थल तक मार्ग में प्रतिनिधियों के स्वागत के लिए अनगिनत बैनर और पोस्टर, चौराहों पर तुलसीदास से लेकर प्रेमचंद और माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर अज्ञेय तक हिंदी के महान रचनाकारों के विशाल चित्र लगाए गए थे। यह देखकर हम सम्मेलन की शुरूआत से पहले ही भावुक हो गए।

भोपाल के लाल परेड मैदान में आयोजित यह हिंदी सम्मेलन अद्वितीय रहा। वहाँ का माहौल हिंदीमय था। उस समय शायद ही वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे अंग्रेज़ी बोलने की आवश्यकता महसूस हो रही हो। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान खुद सारे इंतज़ाम की देखरेख कर रहे थे। विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी इस सिलसिले में भोपाल के कई दौरे किए। आयोजन में मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री तथा पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री की प्रत्यक्ष भूमिका रही।

भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने उद्घाटन भाषण में इस सम्मेलन को हिंदी का महाकुम्भ बताया। उन्होंने कहा कि किसी भी चीज़ की अहमियत तभी पता चलती है जब वह नहीं रहती, और हिंदी के मामले में ऐसा नहीं होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अगर हम अपनी भाषा को समृद्ध नहीं बना सके तो हिंदी पर भी यही खतरा आ जाएगा।

उन्होंने एक किस्सा सुनाते हुए कहा कि उन्हें चाय बेचते-बेचते हिंदी सीखने का मौका मिला। उन्होंने बताया कि गुजरात में उत्तर प्रदेश से लोग दूध लेकर ट्रेन से आते थे। मैं उनके लिए चाय लेकर जाता था। उन्हें गुजराती नहीं आती थी। मेरे पास हिंदी सीखने के अलावा कोई चारा नहीं था। इसी क्रम में मैंने हिंदी सीखी।

उद्घाटन समारोह के दौरान नीली साड़ी में शिक्षा मंत्री लीला देवी दुखन लछुमन

भोपाल में सम्मेलन-स्थल का एक दृश्य (बाहर से)

मुम्बई से भोपाल जाने के लिए प्लेन की प्रतीक्षा करते हुए शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन के साथ श्री यंतुदेव बुधु, श्री टहल रामदीन तथा श्री सत्यदेव टेंगर।

उद्घाटन समारोह में पूरे विश्व के विद्वानों के साथ मॉरीशस के प्रतिनिधिगण

भारत के प्रधान मंत्री ने समारोह के शुभ अवसर पर विशेष डाक टिकट, सम्मेलन स्मारिका तथा गगनांचल पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि हर पीढ़ी का दायित्व है कि उसके पास जो विरासत है उसे सुरक्षित रखे और आनेवाली पीढ़ी को सौंपे। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा में ताकत होती है जहाँ से भी गुज़रती है वहाँ की परिस्थिति को अपने में समाहित करती है।

उद्घाटन के बाद कार्यक्रम को कई सत्रों में बाँटा गया। गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिंहा ने "गिरमिटिया देशों में हिंदी" विषय सत्र की अध्यक्षता की। इसी सत्र में मॉरीशस की शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन ने हमारे देश की ओर से एक आलेख पढ़ा जिसकी सराहना सभी उपस्थित श्रोताओं ने खड़े होकर ज़ोरदार तालियों से की। शिक्षा मंत्री ने बहुत बारीकी तथा गहराई से इस विषय पर अपना विचार व्यक्त किया था। उन्होंने मॉरीशस में हिंदी शिक्षण, स्वैच्छिक संस्थाओं, सृजनात्मक लेखन, मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं तथा हिंदी को लेकर संभावनाओं पर प्रकाश डाला। श्रोतागण बड़े ध्यान से मंत्री जी को सुन रहे थे। इसी सत्र में डॉ. सरिता बुधु ने भी गिरमिटिया विषय पर अपना आलेख पढ़ा तथा एक भोजपुरी गीत का एक अंश भी सुनाया।

अन्य सत्रों में जिन विषयों पर चर्चा हुई इस प्रकार हैं – विदेश नीति में हिंदी, विदेशों में हिंदी शिक्षण, सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी, बाल साहित्य में हिंदी, प्रशासन में हिंदी, प्रकाशन-समस्याएँ और समाधान आदि। कुछ सत्रों की अध्यक्षता वहाँ के मंत्रियों ने की, जिनमें मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चौहान भी थे। हमें अनेकों सत्रों में देश-विदेश के विद्वानों को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

सम्मेलन का तीसरा दिन मॉरीशस के लिए यादगार रहेगा क्योंकि हमारे देश के दो महानुभावों को "विश्व हिंदी सम्मान" से विभूषित किया गया। जबकि बाकी 38 देशों के केवल एक-एक विद्वान ही सम्मानित हुए। मॉरीशस के विश्व हिंदी सचिवालय के शाशी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल तथा विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महा-सचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल को "विश्व हिंदी सम्मान" प्राप्त हुआ। गृह मंत्री श्री राज नाथ सिंह के कर-कमलों द्वारा हमारे दो महानुभाव सम्मानित हुए। यह हमारे देश के लिए बड़े गर्व की बात है। हम इन दो सम्मानित महानुभावों को सभा की ओर से बधाई देते हैं।

समापन समारोह में मुख्य मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आज पूरा भोपाल हिंदीमय है। हिंदी के जिन विद्वानों को सम्मेलन में भाग लेने का मौका मिला, उनके लिए यह अविस्मरणीय अनुभव होगा। ♦

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 1975 में नागपुर-भारत में हुआ। बाकी इस प्रकार हैं :

2. 1976 मॉरीशस में
3. 1983 भारत में
4. 1993 मॉरीशस में
5. 1996 त्रिनिडाड में
6. 1999 इंग्लैंड में
7. 2003 सूरीनाम में
8. 2007 अमेरिका में
9. 2012 दक्षिण अफ्रीका में

प्रधान मंत्री के साथ मंच पर श्रीमती सुषमा स्वराज, श्रीमती लीला देवी दुखन तथा गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिंहा।

श्री मनोहर पुरी | डॉ. राम नरेश मिश्र | श्रीमती लीला देवी दुखन

सत्र के दौरान शिक्षा मंत्री "गिरमिटिया देशों में हिंदी" विषय पर बोलते हुए

शिक्षा मंत्री वाले सत्र में उपस्थित श्रोताओं के बीच मॉरीशस के प्रतिनिधिमंडल

भारत के गृह मंत्री के हाथों "विश्व हिंदी सम्मान" प्राप्त करते हुए श्री अजामिल माताबदल, साथ में खड़े मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चौहान।

भारत के गृह मंत्री के हाथों "विश्व हिंदी सम्मान" प्राप्त करते हुए श्री गुलशन सुखलाल, बाईं ओर खड़े मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री।

इतिहास के पन्नों से .....

हस्तलिखित "दुर्गा" पत्रिका !

"दुर्गा" पत्रिका वास्तव में मॉरीशस के हिंदी साहित्य के लिए एक ज्योति-स्तम्भ रही है। इसके उपलब्ध 34 अंकों में 1686 रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। "दुर्गा" की कहानियाँ मॉरीशस के हिन्दू समाज के विभिन्न पक्षों, परिस्थितियों तथा संघर्षों की यथार्थ कहानी प्रस्तुत करती है।

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा हस्तलिखित "दुर्गा" पत्रिका का किस्सा बड़ा अनोखा है। 1935-1938 के दौरान सभा द्वारा यह हस्तलिखित पत्रिका निकलती रही। उस समय प्रकाशन की असुविधा तो थी ही पर भाषा के प्रचार हेतु उस समय के कर्मठ हिंदी सेवकों ने भाषा के प्रचार के लिए यह साधन अपनाया। भाषा, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए ये कार्य शुरू किए गए।

सभा के कुछ सदस्य "दुर्गा" पत्रिका हाथ से लिखकर आपस में बाँटकर पढ़ते थे और विचार-विनिमय कर दूसरों तक पहुँचाते और पुनः वापस सभा में लौटाते थे। इस तरह यह पत्रिका दो-तीन वर्षों तक चलती रही। सभा के पूर्व मंत्री श्री सुरुज प्रसाद मंगर भगत ने उन सारी पत्रिकाओं का संकलित कर संजोए रखा। यह उन्होंने एक बहुत बड़ा काम किया। आज भी इन पत्रिकाओं के तीन संकलन हिंदी प्रचारिणी सभा के नेमनारायण गुप्त पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। यह मॉरीशस के हिंदी साहित्य की एक बहुत बड़ी धरोहर है।

पत्रिका में अनेक तरह की रचनाएँ होती थीं, जैसे - लेख, नाटक कहानियाँ, पत्र, व्यंग्य, लघुकथा, पहेली, संस्मरण, भेटवार्ता, चुटकुले, समीक्षा तथा कविताएँ आदि। निबंध "दर्गा" की मुख्य विधा थी क्योंकि इसकी संख्या 50 से ऊपर हैं। "दुर्गा" के तीनों संग्रहों में काफ़ी रचनाएँ पाई जाती हैं। सभा की ओर से निकलने वाली आज की "पंकज" पत्रिका में आप "दुर्गा" से एकाध लेख पढ़ सकते हैं। उस समय लेखक छद्म नामों से लिखते थे। सुरुज प्रसाद मंगर भगत जी ज्वाला नाम से, नेम नारायण गुप्त जी केशवदेव नाम से, मधुकर भगत जी कुमार नाम से, बृजलाल धनपत जी व्यास नाम से लिखते थे।

छद्नामों से लिखना उस समय की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति का बोध कराता है। इन सारे लेखकों में आज केवल श्री बृजलाल धनपत जी जीवित हैं जो 103 वर्ष के हैं और वे सभा के संस्थापकों में से एक हैं। नवंबर 1935 के अंक में इनकी लिखी "व्यास" नाम से 'दादा-दादी' शीर्षक कहानी में गोरों के भयंकर उत्पीड़न और अत्याचार की कहानी है। "दुर्गा" के अलावा और दो-तीन छोटी-छोटी अज्ञात नाम से हस्तलिखित रचनाएँ उपलब्ध हैं जो इस प्रकार हैं- 'सीता पाताल', 'सरोदा-स्वर' तथा एक 'भजन संग्रह'।

अब तक "दुर्गा" नामक पत्रिका पर सत्यावती रत्ति नाम की एक छात्रा ने वर्ष 2003 में शोध कार्य (समीक्षात्मक अध्ययन)किया है जिसके कार्य की एक प्रति सभा के पुस्तकालय में मौजूद है। साहित्यकार डॉ. गोयनका के अनुसार "कोई भी साहित्य 'दुर्गा' के अध्ययन के बिना पूर्ण या सार्थक नहीं हो सकता।" ♦

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के शुभावसर पर प्रधान मंत्री मोदी जी का संदेश।

लाल परेड मैदान में बने विशाल सभागार स्थानीय और विदेशी प्रतिनिधियों से खचाखच भरा था। सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन करते हुए प्रधान मंत्री श्री मोदी जी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया; पर विश्व के उनचालीस (39) देशों से आये प्रतिनिधियों का विशेष अभिनन्दन करते हुए हर्षित भाव से बताया कि यह सम्मेलन वस्तुतः हिंदी का महाकुम्भ है। उन्होंने हिंदी को एक चैतन्य भाषा के रूप में विकसित करने का आह्वान किया।

उन्होंने बताया कि आज विश्व में हिंदी एक सशक्त तथा प्रभावशाली भाषा के रूप में उभर रही है। विश्व के लोग हिंदी की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हिंदी की समृदिध के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के साथ जोड़ने की निरन्तर प्रक्रिया चलनी चाहिए। उन भाषाओं के शब्द अपनाने चाहिए। ऐसा करने से दूसरे भाषा-भाषी हिंदी को अपनाने में बिल्कुल संकोच नहीं करेंगे। हिंदी में बहुत से विदेशी शब्द इस प्रकार संग्रहित हैं कि वे अपने ही जान पड़ते हैं। हिंदी के संरक्षण एवं संवर्धन करने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण बात बतायी कि भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उद्घोष करने और प्रचार-प्रसार करनेवाले अधिकतर अहिंदी भाषी अग्रणी रहे हैं। जैसेः- महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, आचार्य विनोबा भावे आदि। हमारी नयी पीढ़ी के लोगों में हिंदी के प्रति प्रेम जाग्रत करना चाहिए। हिंदी में ज्ञान और अनुभव का भण्डार है। हमारी नयी पीढ़ी को इस से लाभ उठाना चाहिए।

अपनी ओर से इंगित करते हुए प्रधान मंत्री बोले - "मेरी मातृभाषा गुजराती है, पर चाय बेचते-बेचते मैंने हिंदी सीख ली। यदि आप व्यापार में हैं और जनभाषा का ज्ञान नहीं, तो जीवन में प्रगति करना बहुत कठिन होगा। यदि मैं हिंदी नहीं सीखता तो शायद मेरी दुकान भी नहीं चलती। हमें अपने संकीर्ण विचारों तथा भावनाओं का परित्याग करना अति आवश्यक है, अन्यथा हिंदी का जिस उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना कर रहे हैं; वह सम्भव नहीं होगा।

विश्व हिंदी सम्मेलन के माध्यम से हिंदी की समृद्धि के लिए हम प्रयत्नशील होंगे तो भविष्य में निश्चित परिणाम अवश्य निकलेंगे, मेरी पूर्णाशा है।

विवरण : टहल रामदीन
(कोषाध्यक्ष-हिंदी प्रचारिणी सभा)

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार सृजन करेगा।

- डॉ. ज़ाकिर हुसेन